ज्योतिष शास्त्र का परीक्षण

मनोज कोमथ

जयंत नार्लीकर और उनके साथियों द्वारा 'ज्योतिष का सांख्यिकीय परीक्षण' एक प्रगतिशील प्रयास है जो भारतीय विज्ञान में एक नए आयाम का आगाज़ करता है। यह कुछ ही समय पहले करंट साइन्स पत्रिका में प्रकाशित हुआ था (*स्रोत* जून 2009 देखें)। यह ज्ञान की एक ऐसी शाखा के वैज्ञानिक परीक्षण की विधियों की ओर संकेत करता है जिसे छद्म विज्ञान माना जाता है। लेकिन लगता है इस पर अपेक्षित ध्यान नहीं दिया गया है।

फलित ज्योतिषः कुछ भ्रम

यूजीसी विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में विज्ञान विषय के तहत 'वैदिक ज्योतिष' को शामिल करना चाहता था। लेकिन भारतीय वैज्ञानिक बिरादरी और अन्य विद्वानों ने यह कहकर इसका विरोध किया था कि ज्योतिष छद्म विज्ञान है जिसका कोई तार्किक आधार नहीं है। यूजीसी का मत था कि ज्योतिष परम्पराओं और शास्त्रीय ज्ञान पर आधारित ऐसा अनुभवसिद्ध विज्ञान है, जो भावी घटनाओं का अंदाज़ा लगाने और वायुमंडलीय अध्ययन, कृषि विज्ञान, अंतरिक्ष विज्ञान आदि के अध्ययन में समाज की मदद कर सकता है।

यहां एक हैरान करने वाला सवाल यह है कि आखिर यूजीसी जैसी उच्च अकादमिक संस्था ने ज्योतिष को विज्ञान कैसे मान लिया जबकि इस दावे के पक्ष में दूर-दूर तक कोई साक्ष्य नज़र नहीं आता। ज्योतिष के किसी भी समर्थक ने आज तक ऐसा कोई वैध सांख्यिकीय सबूत पेश नहीं किया है जो यह साबित कर सके कि ज्योतिष में वाकई भावी घटनाओं का अंदाज़ा लगाने की क्षमता है। भले ही व्यक्तिगत भविष्यवाणियों में इसे सफलता मिली हो, लेकिन यह सामाजिक घटनाओं जैसे प्राकृतिक आपदाओं या हादसों का सही-सही अनुमान लगाने में हद दर्जे तक विफल रहा है। यदि यह इसमें सफल रहता तो कई लोगों की जानें बचाई जा सकती थी। वैसे इसे 'वैदिक ज्योतिष' नाम देना भी गलत है क्योंकि वेदों में ज्योतिष शास्त्र का कोई उल्लेख नहीं है।

अगर नज़दीक से देखें तो लगता है कि यूजीसी आम लोगों की भावनाओं को अभिव्यक्त कर रहा था। हालांकि ज्योतिष शास्त्र का प्रचलन पूरी दुनिया में है, लेकिन भारत में यह सामाजिक संरचना में रचा-बसा है और कुछ हद तक धर्म का भी हिस्सा है। लोग अपना जन्म नक्षत्रों से निर्धारित मानते हैं और यह भी मानते हैं कि उनका जीवन ग्रह की दशाओं से संचालित होता है। यूजीसी के फैसले को आम लोगों के लिए वरदान माना जा सकता था क्योंकि इससे 'अधिक योग्य' ज्योतिषी पैदा होते और वे कहीं अधिक विश्वसनीय ढंग से लोगों को भविष्यफल बता सकते थे।

यूजीसी की इस योजना को रोकने के लिए वैज्ञानिकों और विद्वानों ने सर्वोच्च न्यायालय में विशेष अनुमति याचिका दायर की थी, लेकिन 2004 में अदालत ने यह कहते हुए याचिका खारिज कर दी थी कि सरकार के नीतिगत फैसले में तब तक हस्तक्षेप करना अनुचित होगा, जब तक कि वह कानून के विपरीत न हो या फिर असंगत न हो।

तार्किक लोगों के लिए यह देखना वाकई में बहुत ही कष्टदायक है कि टेक्नॉलॉजी की उन्नति और व्यावहारिक उपयोगिता के बावजूद विज्ञान लोगों में एक छद्म विज्ञान की लोकप्रियता से नहीं जीत सका। यह निराशाजनक इसलिए भी है, क्योंकि वैज्ञानिक क्रियाकलापों के मूल तत्व - तार्किकता

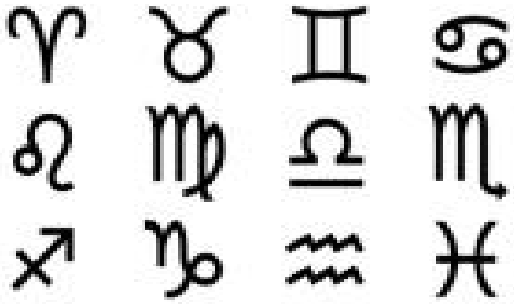

- को बहाल करने का कोई लोकतांत्रिक तरीका नहीं है। वैज्ञानिक प्रक्रियाओं से अनजान आम जनता यह भी सोच सकती है कि वैज्ञानिक समाज के हितों के खिलाफ हैं। उनकी नज़र में ज्योतिष के अपने मजबूत सिद्धांत (खगोलीय आंकड़ों पर आधारित) और अपने नियम व तकनीकें हैं। इसकी व्यावहारिक सफलता के प्रमाण में अनगिनत लोग अपने निजी अनुभव में सही भविष्यवाणियों का हवाला देते हैं। लगता तो यही है कि यह उपयोगी विज्ञान के मानदंड पर खरा उतरता है। फिर, ज्योतिष शास्त्र जीवन में होने वाली घटनाओं की भविष्यवाणियों को संभव बनाता है, जबकि कई बार विज्ञान भी ऐसा करने में विफल रहता है। इसलिए कोई आश्चर्य नहीं कि आम जनता वैज्ञानिकों की इस सोच की आलोचना करती है कि वे औरों से बेहतर हैं।

इस बात पर विचार करना उचित होगा कि आखिर क्यों हमारा नज़रिया आम लोगों के सामने इतना सैद्धांतिक और अप्रभावी हो जाता है। दिलचस्प बात यह है कि 'वैज्ञानिक पद्धतियों' में हमारा दृढ़ विश्वास भी ज्योतिष की पोल खोलने में मदद नहीं कर पाता है। केवल इस आधार पर ज्योतिष शास्त्र को खारिज नहीं किया जा सकता कि उसका कोई सैद्धांतिक आधार नहीं है, क्योंकि विज्ञान की कई शाखाएं केवल अनुभवसिद्ध निष्कर्षों से ही स्थापित हुई हैं। खगोलीय पिंडों के सुनियोजित सैद्धांतिक ढांचे को लेकर हममें विश्वास है। हालांकि इसके बावजूद हम ग्रहीय प्रभावों पर नई परिकल्पनाओं के लिए अपने दरवाजे बंद नहीं करते हैं। ज्ञान की कोई शाखा विज्ञान है अथवा नहीं, इसका निर्णय वस्तुपरक तरीके से किया जाना चाहिए।

व्यक्तिगत भविष्यवाणियों के सही होने की घटनाओं को वैज्ञानिक प्रायः संयोग बताकर खारिज करते आए हैं। इन 'संयोगवश सफलताओं' की अवहेलना नहीं की जा सकती क्योंकि ज्योतिष शास्त्र में विश्वास करने वाले हर व्यक्ति के पास ऐसे उदाहरण होंगे जिनमें भविष्यवाणियां सही निकलीं। वैज्ञानिकों ने, जिज्ञासावश ही सही, कभी यह जानने की कोशिश नहीं की कि ज्योतिष की इस सफलता के पीछे राज़ क्या है। हमारे पास ऐसे प्रारंभिक आंकड़े भी नहीं हैं जिनसे हम आम लोगों को समझा सकें कि ज्योतिष के बारे में उनका रोज़मर्रा का तज़ुर्बा त्रुटिपूर्ण या 'अवैज्ञानिक' है।

नार्लीकर ऐसा एक तरीका बताते हैं जिससे सार्थक जांच कर ज्योतिष की भविष्यवाणी करने की ताकत का परीक्षण संभव है। यह परीक्षण सिल्वरमैन और कार्लसन के तरीके पर आधारित है। दुर्भाग्य से उनकी रिपोर्ट में पिछले एक दशक में पश्चिमी ज्योतिष पर हुए अध्ययनों की बात नहीं की गई है जिनकी बदौलत ज्योतिष को लेकर हमारी समझ में आमूल परिवर्तन आया है।

पश्चिमी ज्योतिष

पिछले छह दशकों में पश्चिम में ज्योतिष पर कई महत्वपूर्ण अध्ययन हुए हैं। जैसा कि स्मिट ने अनुमान लगाया है, वर्ष 2000 तक मनोविज्ञान सम्बंधी शोध पत्रिकाओं में सौ से अधिक और ज्योतिष शास्त्र सम्बंधी शोध पत्रिकाओं में करीब चार सौ शोध पत्र प्रकाशित हुए थे। हालांकि अधिकांश साहित्य अज्ञात है, 91 विशिष्ट अध्ययनों का इंटरनेट पर पता लगा (अधिकांश जानकारी वेबसाइट http://www.astrology-and-science.com/ पर उपलब्ध है)। यहां इन अध्ययनों का एक सारगर्भित विवरण पेश करना उचित रहेगा, क्योंकि वे भारतीय ज्योतिष शास्त्र के मूल्याकंन के हमारे प्रयास में मददगार हो सकते हैं।

1950 तक वैज्ञानिक ज्योतिष शास्त्र को ज्ञान की अवैध शाखा या छद्म विज्ञान बताकर उसे खारिज करते रहे। उन्होंने इसके लिए कभी कोई गंभीर पड़ताल करने का प्रयास नहीं किया क्योंकि इसके लिए ज़रूरी प्रमाण भी उपलब्ध नहीं थे। कुछ आकाशीय पिंडों का मानवीय गतिविधियों से सम्बंध, जैसा कि ज्योतिष शास्त्र कहता है, केवल संयोग की बात मानी गई। इस दिशा में महत्वपूर्ण मोड़ तब आया जब एक फ्रांसीसी मनोवैज्ञानिक व सांख्यिकीविद माइकल ग्वाक्वेलिन ने ज्योतिष के दावों पर अध्ययन करने के लिए लोगों के व्यवसाय व जन्म कुंडलियों की सांख्यिकीय तुलना करना शुरू किया। वर्ष 1955 में वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि जन्म के समय आकाश में मंगल के चढ़ाव और उसके चरम ऊंचाई पर पहुंचने का सम्बंध एथलीटों के कैरियर से होता है। उन्होंने इसे 'मंगल प्रभाव' नाम दिया।

मानव पर ग्रह के रहस्यात्मक असर का वस्तुपरक प्रभाव सामने आने पर वैज्ञानिकों का चकराना लाज़मी था। इससे ज्योतिषी भी दुविधा में पड़ गए क्योंकि यह सम्बंध पारम्परिक ज्योतिषीय सिद्धांतों से मेल नहीं खाता था। ज्योतिषियों, मनोवैज्ञानिकों और संशयवादियों ने इस मंगल प्रभाव का चार दशकों तक विश्लेषण किया। जन्म कुंडलियों के सांख्यिकीय विश्लेषण के माध्यम से भी इस 'प्रभाव' का कई बार विश्लेषण किया गया। अब अतिरिक्त आंकड़ों की मदद से मंगल प्रभाव की तार्किक ढंग से व्याख्या की जा चुकी है।

इससे वैज्ञानिक तरीकों से ज्योतिष की पड़ताल करने के नए रुझान का आगाज़ हुआ। इसके परिणामस्वरूप खोजी दिमाग वाले ब्रिटिश ज्योतिषियों ने 1958 में एस्ट्रोलॉजिकल एसोसिएशन की स्थापना की। उन्होंने ज्योतिष शास्त्र के विभिन्न पहलुओं पर अनुसंधान करने, पूर्वाग्रहों से बचने और नतीजों की समीक्षा करने की व्यवस्था शुरू की। पहले दो दशकों के परिणामों (जिनमें दस देशों के 54 अनुसंधानकर्ताओं को शामिल किया गया था), को '*रीसेंट एडवांसेज इन द नैटल एस्ट्रोलॉजी*' के रूप में 1978 में संकलित किया गया। इसी से प्रेरित होकर 1981 में ज्योतिष शास्त्र पर पहली शोध पत्रिका '*कोरिलेशन*' का प्रकाशन शुरू हुआ। यह पत्रिका वैज्ञानिकों और ज्योतिषियों के लिए विचारों के आदान-प्रदान और इस विषय पर तर्कसंगत ढंग से विचार करने का माध्यम बनी। इसकी शुरुआत से लेकर अब तक इसमें 70 से भी अधिक ऐसे शोध प्रकाशित हुए हैं जिनमें ज्योतिष की भविष्यवाणी करने की तथाकथित शक्ति के खिलाफ निष्कर्ष निकाले गए थे। कई नतीजे सकारात्मक आए मगर वे पारम्परिक ज्योतिष शास्त्र के सिद्धांतों से मेल नहीं खाते थे। इससे ज्योतिषियों में असंतोष पैदा हुआ और पत्रिका के प्रकाशन में रुकावट आ गई।

अलबत्ता ब्रिटेन के उक्त प्रयासों ने अन्य लोगों को प्रेरित किया। बार्थ और बेनेट ने कई लोगों की राशि और उनके व्यवसाय, स्वास्थ्य और कद का सम्बंध देखने की कोशिश की तो कोई सम्बंध नज़र नहीं आया। सौर राशि और व्यवसाय के बीच कथित सम्बंधों की सत्यता की जांच के लिए और भी कई प्रयास किए गए। 1976 से 1979 के बीच लगातार तीन अध्ययन किए गए, लेकिन उनमें ऐसे किसी सम्बंध का प्रमाण नहीं मिल सका। जॉन मैक्गर्वी ने करीब 6000 राजनीतिज्ञों और 17,000 वैज्ञानिकों के जीवन वृत्त और जन्म तारीख का अध्ययन करके यह पता लगाने का प्रयास किया कि क्या इन व्यवसायों वाले लोगों की राशि एक ही है, जैसा कि ज्योतिष शास्त्रियों का मानना होता है। उन्होंने पाया कि दोनों समूहों में राशियां काफी अलग-अलग थीं। कुछ और अध्ययनों में भी व्यवसाय और राशियों के बीच कोई सम्बंध नहीं पाया गया।

प्रसिद्ध 'न्यूयॉर्क आत्महत्या अध्ययन' में प्रेस व उनके साथियों ने न्यूयॉर्क में 1969 से 1973 के बीच हुए आत्महत्या के 311 मामलों की जांच की थी। प्रत्येक मामले में एक लाख विभिन्न ज्योतिषीय कारकों का अध्ययन करने के लिए एक कंप्यूटर प्रोग्राम का इस्तेमाल किया गया। इनकी तुलना इतनी ही संख्या में सामान्य व्यक्तियों के साथ की गई। कोई भी ज्योतिषीय कारक आत्महत्या के मामलों के साथ सम्बद्ध नहीं पाया गया।

विवाहों में राशियों के मिलान सम्बंधी अध्ययन भी हुए हैं। आम लोगों में जीवन साथी का चयन करते समय विशेषज्ञ ज्योतिषियों के परामर्श से राशियों का मिलान करने की परंपरा है। सिल्वरमैन ने मिशिगन में 2978 शादीशुदा जोड़ों और 478 तलाकशुदा जोड़ों का अध्ययन किया। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि जन्मकुंडलियां भले ही मिल जाएं, लेकिन ज़रूरी नहीं है कि वास्तविक जीवन में भी यह मिलन सार्थक हो पाए। पारम्परिक ज्योतिष सिद्धांतों पर बनाई गईं जन्म कुंडलियों के आधार पर की गई भविष्यवाणियां सभी सांख्यिकीय अध्ययनों में गलत साबित हुईं।

वर्ष 1987 में डीन ने जन्म कुंडलियों के सभी 'ग्रहीय पहलुओं' को उलटा करके एक बहुत ही मज़ेदार प्रयोग किया। उन्होंने ज्योतिषियों से कुछ लोगों के जन्म ग्रहों के बारे में सही जानकारी ली और सौर राशि को बरकरार रखकर अन्य ग्रहीय पहलुओं को उलट दिया। फिर उन लोगों के बारे में भविष्यवाणियों के साथ वे कुंडलियां अलग-अलग ज्योतिषियों को दे दी गईं। ज्योतिषियों की भविष्यवाणियों

में इस बात को लेकर कोई सम्बंध नहीं पाया गया कि उन्हें सही कुंडली दी गई थी या उलट दी गई कुंडली।

भविष्यवाणी करने के ज्योतिषियों के कौशल को लेकर भी परीक्षण किए गए हैं। कल्वर और इएन्ना ने उस ज्योतिषी पर परीक्षण किए जिसका दावा था कि उसकी 80 फीसदी भविष्यवाणियां सच होती हैं। इस ज्योतिषी को 28 परीक्षणों में से सात में सफलता मिली और यह दर किसी बात के संयोग से सही होने की दर के बराबर है। एक और परीक्षण में छह ज्योतिषियों को 23 कुंडलियां देकर उनके वास्तविक जीवन की सही प्रोफाइल से मिलान करने को कहा गया। इसमें उन्हें यह नहीं बताया गया कि किस कुंडली वाले व्यक्ति की प्रोफाइल क्या है। इन ज्योतिषियों को व्यक्तिगत आंकड़ों के साथ कुंडलियों के मिलान में उतनी ही सफलता मिली, जितनी कि संयोग से मिलती है।

सौर राशियां और व्यक्तित्व

व्यक्तित्व को सौर राशि से जोड़ना पश्चिमी ज्योतिष का प्रमुख तत्व है। इस वजह से सौर राशि और व्यक्तित्व के बीच सह-सम्बंध अनुसंधान का प्रमुख विषय रहा है। प्रारंभिक अध्ययनों में पेलीग्रिनी ने पाया था कि नारीत्व सूचकांक और जन्म के सीजन के बीच थोड़ा-सा सम्बंध होता है। हालांकि बाद में हुए अध्ययनों में सौर राशि और व्यक्तिगत विशेषताओं के बीच कोई सह-सम्बंध नहीं पाया गया। मेस और क्लग ने 196 लोगों की जन्म कुंडलियों और लीरी ने व्यक्तित्व लक्षण सूची के नतीजों को संकलित किया। इन आंकड़ों की मदद से 13 व्यक्तित्व लक्षणों की तुलना सौर राशि और चंद्र राशि व नक्षत्रों और आठ ग्रहों व पांच ग्रह दशाओं से की गई। इनके बीच कोई उल्लेखनीय सह-सम्बंध नहीं पाया गया। ज्योतिषीय कारकों और व्यवहारों के बीच सम्बंध दर्ज करने वाले अध्ययन भी आगे चलकर गलत ही साबित हुए।

ग्वाक्वेलिन ने 2000 खिलाड़ियों, वैज्ञानिकों और लेखकों की व्यक्तित्व प्रोफाइल की तुलना उनकी सौर राशियों, चंद्र राशियों और जन्म पत्रियों के साथ की, लेकिन वे उनमें किसी भी प्रकार का सम्बंध नहीं ढूंढ पाए। इसके बाद कार्लसन ने उस सिद्धांत का परीक्षण किया जिसके अनुसार किसी व्यक्ति की जन्म कुंडली से उसके व्यक्तित्व की विशेषताओं का सटीक अनुमान लगाया जा सकता है। इसमें कार्लसन ने इस बात को सुनिश्चित किया कि अध्ययन में किसी भी प्रकार का पूर्वाग्रह न हो और ज्योतिषियों को पूरा मौका मिले। ज्योतिषियों की सफलता की दर संयोग से मिलने वाली सफलता से ज्यादा नहीं रही।

वर्ष 2001 में डीन और केली ने उन 40 से भी अधिक अध्ययनों का विश्लेषण किया जो जन्म-कुंडलियों और व्यक्तित्व लक्षणों के बीच सम्बंध के बारे में थे। ये अध्ययन 1975 से 2000 के बीच प्रकाशित हुए थे और इनमें कुल मिलाकर करीब 700 ज्योतिषियों और 1150 जन्म-कुंडलियों को शामिल किया गया था। इस विश्लेषण का निष्कर्ष यही था कि ज्योतिषी संयोग से ज़्यादा बेहतर प्रदर्शन नहीं कर सकते।

पुणे परीक्षण

भविष्य बताने की ज्योतिष शक्ति के परीक्षण के लिए नार्लीकर के कार्य को इस पृष्ठभूमि में देखा जाना चाहिए। पुणे परीक्षण का इसलिए बड़ा महत्व है, क्योंकि ज्योतिष शास्त्र की पड़ताल करने के लिए भारत में यह पहला परीक्षण था। यह कार्लसन की 25 साल पुरानी डबल-ब्लाइंड डिज़ाइन पर आधारित था। कार्लसन के मूल अध्ययन में व्यक्तित्व का निर्धारण करने वाले कई मानदंड थे मगर पुणे परीक्षण में केवल दो मानदंडों - बौद्धिक क्षमता और मानसिक पिछड़ापन - का ही उपयोग किया गया, क्योंकि भारत में व्यक्तित्व सम्बंधी जानकारियों का कोई सुनियोजित रिकॉर्ड नहीं होता है। हालांकि मानसिक क्षमता को जांचने के बजाय यदि लिंग की भविष्यवाणी करने का मानदंड चुना जाता तो कहीं अधिक आसान होता। जन्म कुंडलियों में लिंग एक प्रमुख मानदंड होता है और इसलिए अमुक जन्म कुंडली किस लिंग के व्यक्ति की है, से जन्म कुंडली पढ़ने वाले लोगों का परीक्षण हो सकता था।

हालांकि पुणे परीक्षण संतोषजनक रहा, लेकिन यह भी कई कमियों से मुक्त नहीं रह सका, जैसे जन्म समय को लेकर त्रुटियां रहीं। इसके अलावा परीक्षण में बहुत कम

लोगों को शामिल किया गया था। हाल ही में हार्टमैन ने अपने अध्ययन में 15 हज़ार के नमूने का इस्तेमाल किया है। इस अध्ययन में जन्म तारीख और व्यक्तित्व व सामान्य बौद्धिक क्षमता में अंतर के बीच सम्बंधों की जांच की गई और इसका नतीजा भी पुराने अध्ययनों के नतीजों के समान ही नकारात्मक आया।

परीक्षण के लिए डिज़ाइन बनाते समय पश्चिमी ज्योतिष शास्त्र पर किए गए अध्ययनों को लेकर सावधानी बरतनी होगी क्योंकि उन विधियों को भारतीय ज्योतिष पर लागू करने का बहुत ज़्यादा अर्थ नहीं होगा। हालांकि जन्म कुंडलियां भारतीय और पश्चिमी ज्योतिष दोनों में बनाई जाती हैं, लेकिन भारतीय ज्योतिष नक्षत्र राशियों, चंद्र नक्षत्रों और दशाओं के इस्तेमाल को लेकर पश्चिमी ज्योतिष से अलग है। पश्चिमी परम्परा सौर राशियों और ट्रॉपिकल राशियों के इस्तेमाल पर केंद्रित है। इसलिए भारतीय ज्योतिष के ज़रूरी पहलुओं का परीक्षण अलग से किया जाना चाहिए। कोई सार्थक निष्कर्ष निकालने के लिए कई अलग-अलग व स्वतंत्र अध्ययन और उनका व्यापक विश्लेषण करना होगा। इसलिए इन तथ्यों पर गौर करने के बाद नार्लीकर के इस निष्कर्ष को स्वीकार करना जल्दबाजी होगी कि 'इन परीक्षणों से साफ होता है कि ज्योतिष के आधारभूत दावे बेमानी हैं।' यह अध्ययन ज़्यादा से ज़्यादा यह कहता है कि जन्म कुंडलियों से मानसिक क्षमताओं की भविष्यवाणी नहीं की जा सकती। तलाकशुदा लोगों पर किया गया अध्ययन भी भारतीय ज्योतिष शास्त्र की वैधता के महत्वपूर्ण परीक्षण में काम नहीं आएगा।

'समयगत जुड़वां' अध्ययन

अब हम एक बड़े सवाल पर पहुंचते हैं कि ये वैज्ञानिक परीक्षण इस बात को तय करने में हमारी कितनी मदद करते हैं कि ज्योतिष शास्त्र विज्ञान है अथवा नहीं? पश्चिमी ज्योतिष पर किए गए महत्वपूर्ण अध्ययनों की समीक्षा बताती है कि 'डबल-ब्लाइंड कंट्रोल्ड' परीक्षणों में ज्योतिष शास्त्र खरा नहीं उतर पाया। नकारात्मक नतीजों को ज्योतिषाचार्यों ने अलग-अलग तरीकों से खारिज कर दिया है और इस तरह से उन्होंने ज्योतिष में अपने विश्वास को बनाए रखा है। इसलिए भारतीय ज्योतिष शास्त्र पर प्रस्तावित अध्ययनों का भविष्य भी कोई अलग रहने वाला नहीं है।

यहां सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि जो भी परीक्षण किए गए, वे ज्योतिष सम्बंधी क्रियाकलापों के साक्ष्य की खोज से सम्बंधित थे। महज़ साक्ष्य के अभाव में (जैसे वास्तविक नतीजों का ज्योतिष के पारम्परिक मूलभूत सिद्धांतों से मिलान न होना) ज्योतिष को खारिज नहीं किया जा सकता। ज्योतिष शास्त्री तर्क दे सकते हैं कि यह ज्योतिष के पारम्परिक ग्रंथों की विफलता है और वे नए सह-सम्बंध विकसित कर सकते हैं (जैसा कि ग्वाक्वेलिन ने तब किया था जब उनका अध्ययन पारम्परिक ज्योतिष का समर्थन करने में विफल रहा था)। वास्तविक वैज्ञानिक जांच तो ज्योतिषियों द्वारा परिकल्पित उन परिघटनाओं की होगी जिनके माध्यम से ग्रह प्रभाव डालते हैं। यह परिघटना ग्रहों की कुछ ऐसी रहस्यमय ताकतें हैं जो मिलकर जातक को संचालित करती हैं और इस प्रकार जीवन और घटनाओं को नियंत्रित करती हैं। दिलचस्प बात यह है कि यह परिकल्पित व्यवस्था किसी भी व्यक्ति पर उसके जन्म लेने के बाद काम करना शुरू करती है, यानी यह ताकत गर्भाशय को भेद पाने में विफल रहती है! इसलिए मानना बड़ा ही मुश्किल है कि ऐसी भी कोई व्यवस्था हो सकती है जो जन्म लेने के साथ ही काम करना शुरू कर देती है और चुनिंदा ढंग से मानव व्यक्तित्व और जीवन पर असर डालती है। खगोल भौतिकी और ब्रह्मांड विज्ञान में ऐसा कोई भी ज्ञात सिद्धांत इस तरह की व्यवस्था का समर्थन नहीं करता।

हालांकि ये तथ्य हमें इस प्रकार के प्रभाव की कल्पना करने से नहीं रोकते! क्या उस ग्रहीय परिघटना को कार्यक्षम माना जा सकता है जो हमें जीवन में भविष्यवाणी करने में सक्षम बनाती है, जबकि वैज्ञानिक पद्धतियों पर खरी नहीं उतरती? अल्बर्ट आइंस्टाइन ने एक सदी पहले सापेक्षता का सिद्धांत पेश किया था जो उस समय सामान्य बोध से परे था। वर्तमान में भौतिक शास्त्र में डार्क मैटर और डार्क एनर्जी को स्वीकार किया गया है जिसका कोई भी उपलब्ध सिद्धांत समर्थन नहीं करता है। इसलिए हम मौजूदा वैज्ञानिक

समझ के आधार पर ज्योतिष को यूं ही खारिज नहीं कर सकते। विज्ञान की पद्धति हमें इस परिघटना की उपस्थिति या साक्ष्य की खोज करने को कहती है, चाहे वह हमारी समझ में न आए।

ज्योतिषी ग्रहों की स्थिति को विभिन्न लोगों के व्यक्तित्व में अंतर की वजह मानते हैं और सामान्य लोग भी इससे सहमत दिखाई देते हैं। लेकिन यदि इसे ही सच माना जाए तो फिर एक ही समय और एक ही स्थान पर पैदा होने वाले लोगों के व्यक्तित्व समान होने चाहिए। इससे ज्योतिष की वैज्ञानिक वैधानिकता जांचने की प्रक्रिया बहुत आसान हो जाती है। इसके लिए एक ही स्थान पर एक ही समय में पैदा होने वाले व्यक्तियों (समयगत जुड़वां) की व्यक्तिगत विशेषताओं और उनके जीवन में घटने वाली घटनाओं का अध्ययन भर करना होगा। यदि उनमें संयोग से भी ज़्यादा समानताएं पाई जाती हैं तो उससे ज्योतिष शास्त्र की वैधता साबित हो जाएगी। चूंकि इसमें जन्म-कुंडलियां बनाने और जन्म-पत्रियों को पढ़ने की ज़रूरत नहीं रहेगी और इसलिए गलतियों, अनिश्चितताओं व ज्योतिषियों की योग्यता का सवाल भी नहीं उठेगा। चूंकि इसके प्रभाव भारतीय ज्योतिष शास्त्र और पश्चिमी ज्योतिष शास्त्र में समान होंगे, इसलिए राशियों के फर्क का मसला आएगा ही नहीं। इस प्रकार समयगत जुड़वां अध्ययन बहुत ही सरल, स्पष्ट और ज्योतिष शास्त्र के वैज्ञानिक आधार का सार्वभौमिक परीक्षण होगा।

सबसे पहले प्रोफेशनल ज्योतिषी जॉन एडी ने समयगत जुड़वां पर अध्ययन किया था। हालांकि उन्होंने जितने लोगों पर यह अध्ययन किया था, उनकी संख्या इतनी कम थी कि उससे किसी वैध सांख्यिकीय निष्कर्ष पर नहीं पहुंचा जा सका। समयगत जुड़वां के सम्बंध में पहला व्यवस्थित अध्ययन ब्रिटिश ज्योतिषी पीटर रॉबर्ट्स और हेलेन ग्रीनग्रास ने किया था। इसमें 1934 से 1964 के बीच छह तारीखों पर एक घंटे के अंतराल में पैदा हुए 128 लोगों को शामिल किया गया था। हालांकि 18 जोड़ियों में रुचियों और व्यवसाय को लेकर कुछ समानताएं पाई गईं, लेकिन ये ज्योतिषीय भविष्यवाणियों से मेल नहीं खाती थीं। हालांकि अध्ययनकर्ताओं का दावा था कि वे जैसे-जैसे जन्म समय के बीच अंतर को घटाते गए, समानताओं का अनुपात बढ़ता गया। इस दिलचस्प परीक्षण की समकालीन शोधकर्ताओं ने पड़ताल की और इसके विश्लेषण से पता चला कि इसमें प्रक्रियात्मक खामियां थीं। जब इन खामियों को नियंत्रित कर लिया गया तो वे समानताएं जाती रहीं।

इसका अधिक व्यापक, व्यवस्थित और प्रभावी परीक्षण डीन और केली ने किया जिसमें 3 से 9 मार्च 1958 के बीच लंदन में पैदा हुए 2101 लोगों को शामिल किया गया था। आंकड़ों की विश्वसनीयता सुनिश्चित करने के लिए जन्म से सम्बंधित रिकॉर्ड अस्पतालों से एकत्र किए गए थे और ज्योतिष सम्बंधी पहलुओं को सात शीर्ष ज्योतिष शास्त्रियों की सलाह पर शामिल किया गया था। सभी व्यक्ति औसतन 4.8 मिनट के अंतर पर पैदा हुए थे, यानी समान ज्योतिषीय पहलुओं को उन पर लागू किया जा सकता था। प्रत्येक व्यक्ति का 11, 16 और 23 साल की उम्र में परीक्षण किया गया। इनमें ऐसी 110 विशेषताओं का अध्ययन किया गया जो उनकी जन्म-कुंडलियों में दिखनी चाहिए थीं। इनमें टेस्ट स्कोर (आईक्यू, पठन एवं गणित के लिए), शारीरिक आंकड़े (जैसे कद, वज़न और श्रवण शक्ति), शिक्षकों और अभिभावकों की रेटिंग (बेचैनी, आक्रामकता और सामाजिकता आदि व्यवहार से सम्बंधित) और स्वयं की रेटिंग (कला, संगीत और खेल में योग्यता की) और साथ ही कुछ अन्य कारकों जैसे व्यवसाय, जीवन में घटित होने वाले हादसे, और वैवाहिक स्थिति को भी शामिल किया गया था। कोई 16 मापदण्ड ऐसे थे जो प्रत्येक व्यक्ति की माताओं से जुड़े थे जैसे उम्र, रक्तदाब और प्रसव में लगने वाला वक्त इत्यादि जिन पर ग्रहों की स्थिति का असर नहीं पड़ना चाहिए।

जब इन सभी लोगों को उनकी उम्र के क्रम में व्यवस्थित किया गया तो 2100 ऐसे जोड़े निकले जो पांच मिनट या उससे भी कम समय के अंतराल में पैदा हुए थे। 15 मिनट या उससे अधिक समय के अंतराल में पैदा होने वाले जोड़े महज़ चार फीसदी ही थे। व्यक्तित्व की प्रत्येक विशेषता के लिए समयगत जुड़वां के बीच समानताओं को और इसी तरह क्रमिक जोड़ों के बीच सम्बंधों को मापा गया। कुल मिलाकर पूरी सांख्यिकीय प्रक्रिया का नतीजा यह निकला

कि ज्योतिषीय कारकों का कोई सम्बंध व्यक्तित्व की विशेषताओं से नहीं होता।

निष्कर्ष

पश्चिमी ज्योतिष शास्त्र पर बीते 60 सालों के दौरान किए गए व्यापक परीक्षणों से यही साबित होता है कि ज्योतिष शास्त्री संयोग से ज़्यादा सटीक भविष्यवाणी करने में सक्षम नहीं हैं। समयगत जुड़वां अध्ययनों से ज्योतिष शास्त्र में परिकल्पित ग्रहीय प्रभावों की आधारभूत व्यवस्था का खंडन होता है। अब इस बात के पर्याप्त सबूत हैं कि ज्योतिष की अपेक्षा विज्ञान ही विजयी है। हमें भारत में ज्योतिष के मामले में इसी तरह की रणनीति अपनानी चाहिए।

ज्योतिष और मनोविज्ञान - फोरर प्रभाव

ज्योतिष पर विश्वास करने वाले लोगों के व्यक्तिगत साक्ष्यों पर ही उसकी सफलता टिकी है। हालांकि ज्योतिष शास्त्र समाज में होने वाली घटनाओं की भविष्यवाणी करने में बुरी तरह से विफल रहा है, लेकिन व्यक्तिगत मामलों में इसे काफी सफलता मिली है। कई बार ज्योतिष पर विश्वास नहीं करने वाले लोगों को भी उसकी सटीकता को लेकर आश्चर्य होता है। इस विडंबना को 'फोरर प्रभाव' (इसे 'बारनम प्रभाव' भी कहते हैं) के जरिए समझा जा सकता है। यह वह मनोवैज्ञानिक पूर्वाग्रह है जो अपने व्यक्तित्व के वर्णन से व्यक्ति के लगाव की वजह से पैदा होता है। इस पूर्वाग्रह के चलते व्यक्ति तमाम लोगों पर लागू करने के लिए लिखी गई अस्पष्ट और सामान्य सूचनाओं के बारे में मान लेता है कि वे उसके लिए ही लिखी गई हैं।

स्वयं के बारे में अच्छी-अच्छी बातों पर विश्वास करने की मनुष्य की लालसा का उम्दा व्यावसायिक दोहन 19वीं सदी के अमेरिकी शोमैन एवं मनोरंजन के क्षेत्र से जुड़े पी. टी. बारनम ने किया था। 1948 में एक अमेरिकी मनोवैज्ञानिक बर्ट्रैम आर. फोरर ने इसका अकादमिक रूप से अध्ययन किया और क्लासरूम डिमॉन्स्ट्रेशन का डिज़ाइन तैयार किया। उन्होंने अपने विद्यार्थियों को एक व्यक्तित्व विवरण दिया था जिसमें कहा गया था - 'आपको ऐसे लोगों की ज़रूरत है जो आपको पसंद करें और आपकी सराहना करें मगर फिर भी आप स्वयं की आलोचना करते हैं। यद्यपि आपके व्यक्तित्व में कुछ कमियां हैं, लेकिन आप आम तौर पर उनकी भरपाई करने में सफल रहते हैं। आपमें ऐसी काफी क्षमता है जिसका उपयोग आप अपने हक में नहीं कर पाए हैं। आप बाहर से काफी अनुशासित और संयमित हैं, लेकिन अंदर से उतने ही चिंतित और असुरक्षित महसूस करते हैं। कई बार आपको शंका होती है कि आपने जो फैसला लिया है या कार्य किया है, वह सही है अथवा नहीं। आप कुछ निश्चित मात्रा में बदलाव और विविधता चाहते हैं और जब आपको दायरों में बांधने की कोशिश होती है तो आप असंतुष्ट हो जाते हैं। आपको गर्व है कि आप एक स्वतंत्र विचारक हैं और बगैर किसी संतोषजनक सबूत के दूसरों की बातों को स्वीकार नहीं करते हैं। मगर आपको यह भी ठीक नहीं लगता कि दूसरों के सामने खुद को ज़्यादा खोलें। कई मौकों पर आप बहिर्मुखी, मिलनसार और सामाजिक हैं तो कई मौकों पर आप अंतर्मुखी, सतर्क और अलग-थलग होते हैं। आप की कई महत्वाकांक्षाएं अयथार्थवादी होती हैं।' छात्रों से कहा गया था कि वे स्वयं को इस विवरण के आधार पर 0 (सबसे खराब) से लेकर 5 (सबसे बेहतर) के पैमाने पर आंकें। सभी छात्रों को एक ही विवरण दिया गया था और कक्षा का औसत मूल्यांकन 5 में से 4.26 था। सैकड़ों बार फोरर परीक्षण किया गया और हर बार औसत 4.2 (84 फीसदी सटीकता) के आसपास ही रहा।

संक्षेप में कहें तो फोरर यह समझाने में सफल रहे कि बगैर किसी ईश्वरीय शक्ति के भी लोगों के 'चरित्र' को पढ़ पाना संभव है। लोगों की व्यक्तिगत विशेषताओं को इस प्रकार से जानने का यही भ्रम ज्योतिष और ऐसे ही अन्य कार्यों को मान्यता देने के पीछे बड़ी वजह है।

इसके साथ ही यह भी समझना चाहिए कि परिकल्पनाओं के लिए सबूत जुटाने के प्रयासों का न तो वैज्ञानिक महत्व है और न ही इससे ज्ञान के क्षेत्र में कोई विशेष योगदान होगा। खगोल विज्ञान और ब्रह्मांड विज्ञान के वैज्ञानिकों और संस्थानों को केवल यह साबित करने के लिए अपने मूल्यवान संसाधनों व मानव शक्ति का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए कि विज्ञान सही है। इससे बेहतर तो यह होगा कि स्कूली छात्रों या मानविकी के स्नातक विद्यार्थियों को उनके पाठ्यक्रम में प्रोजेक्ट वर्क के रूप में इसे करने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।

जहां तक ज्योतिष शास्त्र को लेकर भारतीयों के नज़रिए का सवाल है, हम चाहे कितने भी प्रयास कर लें, अध्ययनों के नतीजों से बहुत ज़्यादा असर पड़ने वाला नहीं है। इसकी कुछ ठोस वजहें हैं। इनमें से एक वजह तो यह विश्वास है कि ज्योतिष का जीवन में होने वाली कुछ अनपेक्षित घटनाओं पर नियंत्रण होता है। ज्योतिषाचार्य लोगों को इस सांसारिक दुनिया की कई चिंताओं (शादी से लेकर शेयर बाजार में निवेश तक) का सस्ता और हानिरहित इलाज बताते हैं। हम इस तथ्य से इन्कार नहीं कर सकते कि हमारी सामाजिक मानसिकता अत्यंत दुर्बल है और ज्योतिष को मानवीय ज़रूरत के रूप में स्वीकार करती है। हमारे सामने चुनौती सामाजिक मानसिकता को मज़बूत करने की है। इसका दूसरा पहलू व्यावसायिक है। आधुनिक युग में तकनीकों की मदद से ज्योतिष का प्रचलन बढ़ा है। अब यह फोनलाइन, टेलीविज़न चैनलों और इंटरनेट के माध्यम से सभी जगह उपलब्ध है। इससे व्यवसाय की नई संभावनाएं खुली हैं। भारत में ज्योतिष का धंधा बेहद लाभकारी व्यवसाय में बदल गया है जो आउटलुक पत्रिका के मुताबिक 40 हज़ार करोड़ रुपए के बराबर है। यदि हम युवा पीढ़ी को ज्योतिष शास्त्र के परीक्षण में शामिल करते हैं तो कम से कम आने वाली पीढ़ियों में हम इस विवेकहीन व्यापार को चरणबद्ध ढंग से हटा सकेंगे। ***(स्रोत फीचर्स)***

अगले अंक में

स्रोत नवम्बर 2009
अंक 250

- **वस्तुओं का नामकरण और वर्गीकरण**
- **कैसे कराते हैं कृत्रिम बारिश**
- **अपनाएं इको विसर्जन की राह**
- **गरम मसाले के अनोखे जीव**
- **संजीवनी की तलाश में**